महामत कहे ऐ मोमिनों, ए चौथे पहर की विरत ।
अब कहूं पोहोर पांचमां, सुनियो तन मन हित ॥६१॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दर साथ जी । इस प्रकार श्री पन्ना जी में उस समय सुन्दरसाथ ने अपने धाम धनी को रिझाने के लिए सायं ३ बजे से ६ बजे तक सेवा की जिसका वृत्तान्त आपको सुनाया है । अब पांचमा पोहोर जो सायं ६ से ९ बजे रात्रि तक होता है उस समय में जो सेवा सुन्दरसाथ ने की, उसे बहुत ही चाव से तन मन से सुनिए ।

(प्रकरण ६७, चौपाई ४०२८)

पांचमा पहर

अब कहूं पहर पांचमा, आया जब बखत ।
हुआ समें बैठन का, ऊपर इन तखत ॥१॥

अब आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं - हे सुन्दरसाथ जी ! अब पांचवें पहर में, जो सायं ६ से ९ बजे तक का समय होता है आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी तख्त पर विराजमान होते हैं, सुन्दरसाथ ने किस प्रकार उनकी सेवा कर धाम धनी को रिझाया उसका वृत्तान्त सुनिए ।

लच्छो अरज करत हैं, राज पधारो कौन घाट ।
श्री राज उत्तर देत हैं, आज पधारें पाट ॥२॥

तब लच्छो बाई श्री जी के सामने आकर अर्ज करके पूछती है कि हे धनी ! परमधाम में जाग्रत होने के बाद आप हम कौन से घाट जाएंगे । तब श्री जी फुरमाते हैं कि परमधाम में उठने के बाद कृष्ण पक्ष अर्थात् अंधेरे पक्ष की एकम का दिन है इसलिए पाट घाट पधारेंगे ।

तखत बिछौने होत हैं, बिछावत बिहारी दास ।
तलाई ओछाड़ सूजनी, तकिए धरे मखमली खास ॥३॥

तख्त के ऊपर सेज्या सजाने की सेवा बिहारी दास करते हैं । सेज्या के ऊपर गद्दा, उस पर ऊछाड़ दसूती का चढ़ाया जाता है और तकिए मखमली रखे जाते हैं ।

इत जोड़े तखत के, गादी बिछौने होए ।
चारे गमा ते तान के, बिहारी दास धरें सोए ॥४॥

तखत के साथ में ही गादी बिछा कर सजाई जाती है । यह सेवा बिहारी दास जी करते हैं और गादी पर बिछौना खैंचकर साफ करके बिछाया जाता है ताकि कोई सलवट न रहे ।

Nijanand App

दीपक सेवा में खड़ी, मानक करमेती ।
श्री राज को रिझावत, सब विध सुख देती ॥५॥

दीपक, मानिक, करमेती सेवा में खड़ी हैं, जो हर प्रकार से धनी को रिझा कर आनंदित करती हैं ।

सुखपाल में बैठ के, श्री बाई जी आवत ।
अरज आरोगन की, मीठी बातें करत ॥६॥

चितवन के समय में श्री बाई जू राज को सुखपाल में बिठा कर लाते हैं । चितवन के बाद आप श्री बाई जू राज श्री जी से आरोगने हेतु बड़ी प्यार भरी बातें करते हुए अर्जी करते हैं ।

इत थाल आरोगन की, ल्याई मथुरी और हिंमत ।
साक तरकारी कटोरी, लेके आगे धरत ॥७॥

संध्या के समय आरोगने के लिए मथुरी और हिम्मत थाल लेकर आती हैं और सब साग-तरकारी की कटोरियां उसमें रखी होती हैं ।

श्री महाराजा बाई जी, बैठत अरूगावने थाल ।
हाथ पखालत प्रेम सों, मानक सेवा करें खुसाल ॥८॥

इस समय थाल अरूगाने के लिए माणिक भाई बड़े प्रेम से श्री जी के हाथ धुलाते हैं । महाराजा छत्रसाल और बाई जू राज श्री जी को थाल अरूगाने के लिए बैठते हैं ।

हाथ पोंछने को दिया, रूमाल श्री महाराज ।
एक मुंह आड़े अपने बांध के, अरूगावत श्री राज ॥९॥

महाराजा छत्रसाल जी हाथ पोंछाने के लिए रूमाल देते हैं और आरोगाते समय महाराजा छत्रसाल एक रूमाल अपने मुंह पर बांध लेते हैं ।

आरोगत अत हेत सों, सो कहां लो कहों मैं ए ।
राज भोग सामग्री लवाजमें, सब साक तरकारी के ॥१०॥

आप धाम के दुल्हा श्री प्राणनाथ जी बड़े प्यार से बैठ कर आरोगते हैं । इस सेवा का वर्णन किया नहीं जा सकता । इस समय के संध्या के थाल में सब प्रकार की साग-तरकारी, व्यंजन अथाने परोसे गए हैं ।

Nijanand App

इत रूमाल आड़े डार के, सेवे बिहारी दास ।
सखियां सब ठाढ़ी रहे, मन में सेवन की आस ॥११॥

श्री जी के आगे रूमाल डालने की सेवा बिहारी दास करते हैं । सब सुन्दरसाथ सेवा करने की इच्छा से चरणों में हाजिर खड़े हैं ।

थाल ले आगे धरी, बैठे पकड़ महाराज ।
मीठी रसना सों बातें करें, रीझ रीझ के राज ॥१२॥

महाराजा छत्रसाल जी अपने हाथ से थाल आगे रखते हैं । वे थाल पकड़ कर बैठते हैं और आप धाम धनी रस भरी रसना से रीझ-रीझ कर मीठी-मीठी बातें छत्रसाल जी से करते हैं ।

आरोगत अत हेत सों, बातें करें बनाए ।
धाम धनी गाए रिझावहीं, कवल देत हैं ताए ॥१३॥

आप धाम के दुल्हा श्री प्राणनाथ जी बड़े हेत, प्यार के साथ आरोगते हैं और जो इस समय वाणी गाकर अपने धनी को रिझाते हैं, उनको स्वयं श्री जी अपने हाथ से प्रसन्न हो कर प्रशाद देते हैं ।

बाई जी बातां करत है, आरोगने के बखत ।
श्री राज रीझ के कहत हैं, ऊपर बैठ इन तखत ॥१४॥

थाल आरोगने के समय में श्री बाई जू राज पास बैठी हैं और श्री जी से बातें करती हैं । आप धाम दुल्हा रीझ-रीझ कर रसभरी रसना से बातों का उत्तर देते हैं ।

जल छबील दास ल्याइया, आरोगने को हक ।
कंचन कटोरे सुन्दर, जल बाए देत माफक ॥१५॥

छबील दास आरोगते समय अति सुन्दर सोने के कटोरे में ऋतु अनुसार जल भर कर देता है ।

कोई वस्त अरूगावने, मसाला ल्यावें घर से ।
मेवा मिठाई पकवान, राज हेत कर आरोगते ॥१६॥

यदि कोई सुन्दरसाथ इस समय अपने घर से आरोगाने के लिए कोई वस्तु, मसाला, मेवा, मिठाई, पकवान आदि लेकर आते हैं तो श्री जी अवश्य ही उस को बड़े प्यार से आरोगते हैं ।

श्री राज रहे आरोग के, सैयां उठाई थाल ।
चुल्लू करावें चोपसों, सकुण्डल दिल खुसाल ॥१७॥

जब श्री जी आरोग लेते हैं तो सुन्दरसाथ थाल उठा लेते हैं और छत्रसाल जी बड़ी प्रसन्नता के साथ चौकस होकर चुल्लू कराते हैं ।

Nijanand App

कहवा आरोगने को, ले आई मानक ।
भरके देवे हाथ में, ए जो गंगादास बुजरक ॥१८॥

थाल आरोगने के बाद मानिक बाई कहवा आरोगाने के वास्ते लाती हैं । कहवा कटोरी में भर कर देने की सेवा गंगादास जी करते हैं ।

फूल सुपारी बीड़ी मिनें, अरूगावे कल्याण ।
ऐ सेवा श्री बाई जी की, दई सेवक अपना जान ॥१९॥

पान बीड़ी आरोगाने की सेवा श्री जी ने बाई जू राज को खास अपनी अर्धांगिनी होने के कारण से दी है और पान बीड़ी में फूल सुपारी बारीक काट कर कल्याण बाई आरोगाने के वास्ते हाजिर करती हैं।

बीड़ी वालत श्री बाई जी, महाराजा अपनी ।
दे सुपारी मानक छबीला, और सेवत महारानी ॥२०॥

पान बीड़े लगाने की अपनी-अपनी सेवा बाई जू राज और महाराजा छत्रसाल जी करते हैं । बारीक सुपारी काटकर माणिक और छबीला हाजिर करते हैं और बाई जू राज पान बीड़े की सेवा स्वयं करती हैं।

हार कलंगी आवत, ऊपरा ऊपर इत के ।
ले ले नाम मुजरा होत हैं,होए जुबां एक एक के ॥२१॥

इस समय फूलमालाएं और फूलों की कलंगी सब सुन्दरसाथ अपने हाथों से बनाकर लाते हैं और एक-एक का नाम लेकर श्री जी को पहनाते हैं ।

संभू ओका जसिया, ल्यावत हैं कलंगी ।
श्री राज हाथों धरत हैं, सेवा अंगीकार करी ॥२२॥

शंभू, ओका और जसिया फूलों की कलंगी लेकर आते हैं । आप धाम के धनी अपने हाथों से उनकी सेवा स्वीकार करते हैं ।

महाराजा कलंगी बनावत, अपने हाथों कर ।
बांधत लटकनी छब की, हाथों हाथ धरें सिर पर ॥२३॥

छत्रसाल जी अपने हाथों से फूलों की कलंगी बनाते हैं और श्री जी उस कलंगी को लेकर पाग के ऊपर अपने हाथों से रख लेते हैं ।

Nijanand App

मुकुन्द दास ले आवत, तुर्रा कलंगी परन ।
श्री राज सिर पर धरत हैं, झलकत है किरन ॥२४॥

मुकुन्द दास इस समय मोरपंख का तुर्रा और कलंगी बना कर लाते हैं । जिसे आप श्री जी लेकर पाग पर रखते हैं । मोर के परों की किरणें झलकती हैं ।

महाराज के रावर से, आवत कलंगी हार ।
चित माफक अपने सोभित, दे महाराजा अपने लार ॥२५॥

छत्रसाल जी के महलों से फूलों की कलंगी और हार महारानियां बना कर भेजती हैं । अपने दिल के भाव के हिसाब से बनी हुई इन कलंगियों को अपनी कलंगी के साथ ही दे देते हैं ।

कहा कहों इन समें की, जहां राज बिराजे तखत ।
आई जी मोरछल करत हैं, सो कहयो न जाए बखत ॥२६॥

अब इस समय जब धाम के धनी तखत पर विराजमान होते हैं तो उस समय की शोभा का वर्णन नहीं हो सकता । इस समय मोरछल झुलाने की सेवा आई जी करती हैं ।

महाराजा मोरछल लिए, दोऊ बाजू चंवर ढुराए ।
सेख बदल लाल खान, हाथ फेरत चमर बनाए ॥२७॥

छत्रसाल जी मोरछल झुलाने की सेवा करते हैं और तखत के दोनों तरफ शेखबदल और लालखान चंवर झुलाने की सेवा करते हैं और अनोखे ढंग से चंवर को झुलाते हैं ।

कबहूंक पीठ पीछे होए के, लाल केसव करे अरज ।
कुरान हदीसां वास्ते, रहे पढ़नें की गरज ॥२८॥

कभी-कभी लाल दास और केशवदास पीठ के पीछे खड़े होकर कुरान और हदीसों को पढ़ कर अर्थ समझाने की प्रार्थना करते हैं ।

चितवनी की बारी मिने, भोग दियो बखत इन ।
गावत संझा को अवसर, पहर रात लो रोसन ॥२९॥

चितवनी की बारी वाले इस समय श्री जी के सामने भोग अर्पित करते हैं । सब सुन्दरसाथ मिल कर एक पहर रात को "संझा का अवसर" का गायन कर श्री जी को आनंदित करते हैं ।

Nijanand App

मना अरज करत हैं, बस्तर सुनने की ।
सो राज मोसों कहो, मैं हाजिर ना थी ॥३०॥

मन्नाबाई श्री जी से युगल स्वरूप श्री राज जी महाराज के वस्त्र, भूषण, श्रृंगार की चर्चा सुनाने के लिए अर्ज (विनती) करती हैं और कहती हैं हे धनी ! मैं चर्चा में हाजिर नहीं थी ।

साड़ी रंग सेंदुरिएँ, स्याम जड़ाव कन्चुकी ।
नीली लाहिको चरनियां, ए बस्तर ठकुरानी जी ॥३१॥

श्री जी उनकी अर्ज सुनकर पुनः फुरमाते हैं कि श्यामा महारानी जी की साड़ी सेंदुरिया रंग की है । श्याम रंग की कंचुकी (चोली) जिसमें नग जड़े हैं और नीले लाल-धूप-छांव रंग की चरणियां, श्यामा जी धारण किए हुए हैं ।

चीरा रंग सेंदुरिया, जामा सुपेत जवेर तार ।
पछेड़ी रंग आसमानी, देख परवरदिगार ॥३२॥

सेंदुरिया रंग की पगड़ी, सफेद रंग का जामा-लंबा कुर्ता, जरी से जड़ाव किया हुआ और आसमानी रंग की पिछौरी है । चितवन कर अपने धनी के वस्त्रों को निहारो ।

नीले पीले रंग को, पटका बांधो कमर ।
केसरिया रंग इजार है, ल्यो मूल बागों दिलधर ॥३३॥

नीले-पीले रंग का पटुका श्री राज जी महाराज की कमर में बंधा है । केसरिया रंग की इजार-चूड़ीदार पाजामा पहने हैं । यह अपने मूल स्वरूप श्री राजश्यामा जी का बागा है । स्वयं चितवन कर दर्शन कीजिए।

आज निरत नवरंगबाई को, साड़ी जड़ाव स्याम ।
आंबा रस कंचुकी, पांच पटे चरनियां इस ठाम ॥३४॥

आज नृत्य के समय नवरंग बाई काले रंग की जड़ाव वाली साड़ी, आम के रंग की पीली चोली और पांच रंग की बनी चरणिया (पेटीकोट) पहने हैं ।

पहिनी इजार नीली, ए बस्तर बाई निरत ।
और सिनगार सब साथ को, स्यामा जी माफक देखत ॥३५॥

और साड़ी के नीचे नीले रंग की इजार पहनी है । यह वस्त्र नवरंग बाई नृत्य के समय पहनती हैं । बाकी सब ब्रह्मसृष्टियों का श्रृंगार श्री श्यामाजी के समान ही है ।

Nijanand App

ए बस्तर सब साथ को, कहते बखत दोए ।
एक प्रात और संझा समें, साथ सुनत हैं सोए ॥३६॥

इस प्रकार आप धाम के दुल्हा श्री प्राणनाथ जी प्रातः और सायंकाल श्री राज जी महाराज के स्वरूप श्रृंगार का वर्णन चर्चा में अवश्य सुनाते हैं और इस चर्चा को सब सुन्दरसाथ बड़े ध्यान से सुनते हैं ।

सरूप दाता ब्रह्मांड में, भए हैं दो तीन ।
सो लिखे सास्त्रों मिने, जो ल्याए आकीन ॥३७॥

इस सारे ब्रह्मांड में दुनियां वालों के लिए पूजा के स्वरूप दो या तीन ही हुए हैं । शास्त्रों में जिनका वर्णन है वो इस नश्वर जगत के परमात्मा, त्रिदेवा (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) आदि हैं । सारी दुनियां के लोग इन्हीं पर विश्वास रखते हैं ।

सो सरूप बैकुण्ठ का, जाए कह्या मलकूत ।
कहने वाले फिरस्ते, जिनका ठौर जबरूत ॥३८॥

वह तीनों बैकुण्ठ धाम के रहने वाले हैं जिसको कुरान में मलकूत कहा गया है । फरिश्ते, देव आदि जिस स्वरूप का वर्णन यहां करते हैं, वह अक्षर ब्रह्म है । जबरूत के स्वामी अक्षर ब्रह्म हैं ।

ए सूरत अरस अजीम की, जाय कह्या अक्षरातीत ।
कहने वाले धाम धनी, सुने मोमिन कर परतीत ॥३९॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी अर्श, परमधाम के स्वरूप का वर्णन करते हैं जिनको शास्त्रों में अक्षरातीत कहा है । चर्चा करने वाले अक्षरातीत पारब्रह्म के साक्षात् स्वरूप श्री प्राणनाथ जी स्वयं हैं और इस चर्चा को पारब्रह्म की आत्मायें ही अपने धाम धनी की पहचान करके बड़े यकीन से सुनती हैं ।

नेष्टाबन्ध सुनत हैं, जाए सांच होवे कान ।
पांव हाथ अंग इन्द्रियां, होए हक की ताए पहिचान ॥४०॥

इस अखंड स्वरूप की निष्ठा से वही चर्चा सुन सकते हैं जिनकी आत्मा जाग्रत हो चुकी हो और कानों में सुनने की शक्ति हो तथा जिनके हाथ-पांव व गुण-अंग-इन्द्रियां श्री राजजी की सेवा में ही समर्पित हो चुकी हों और जिनको अपने धाम धनी की पहचान हो चुकी हो ।

दूसरा कोई इत आए के, कबूं न बैठ सकत ।
काहू खुसामद गरज आवही, पर मिने न पेठ सकत ॥४१॥

कोई संसार का जीव ऐसी चर्चा में आकर बैठ ही नहीं सकता और यदि किसी की सोहोबत से आ भी जायेगा तो चर्चा में नहीं बैठ सकेगा । यह चर्चा अंदर अंकूर न होने के कारण से उसको अच्छी नहीं लगेगी ।

Nijanand App

ए तो बात अंकूर की, होए न बिना सनमंध ।
जो दुनियां को देखहीं, ताए कहूया बड़ा अंध ॥४२॥

श्री राजजी महाराज के सरूप और श्रृंगार की चर्चा परमधाम का अंकूर होने पर ही कही या सुनी जा सकती है और मूल मिलावे में बैठी ब्रह्मसृष्टियों के अतिरिक्त, निसबत के बिना किसी और को मिल भी नहीं सकती और जिनकी दृष्टि दुनियां में ही फंसी है, उनको शास्त्रों में विवेकहीन अंधों के समान कहा है ।

जब कलाम रब्बानी खुले, तब हुआ वखत कयामत ।
तब लगा रोजगार को, है बड़ा कम हिंमत ॥४३॥

धाम के धनी ईमाम मेहंदी श्री प्राणनाथ जी ने हकीकत और मारफत की वाणी श्री कुलजम सरूप से कुरान के छिपे भेदों के रहस्य खोल दिए तो कुरान की भविष्यवाणी के अनुसार यही वक्त ग्यारहवीं सदी कयामत के जाहेर होने का था, जो आ गया और ऐसे समय में भी संसार के लोग माया की झूठी चाहनाओं की पूर्ति में लगे रहे । इसलिए इस संसार के जीव माया रूपी दज्जाल से कभी भी छूट नहीं सकते ।

आया समें आरती का, साथ आवत चारों तरफ ।
इन समें सोभा की, कहूयो न जाए हरफ ॥४४॥

इस समय संध्या आरती का समय होने पर चारों ओर से सुन्दरसाथ आकर इकट्ठे हो जाते हैं । संध्या आरती की शोभा व आनन्द का वर्णन जुबां की शक्ति से बाहर की बात है ।

श्री बाई जी आवत इन समें, होत बिछौने जोड़े तखत ।
गादी तकिए बिहारी दास, बिछावत हैं इत ॥४५॥

इस समय श्री बाई जू राज भी आती हैं, उनके लिए सिंहासन पर ही स्वामी जी के साथ गादी तकिया बिछाने की सेवा बिहारी दास जी करते हैं ।

आरती होत आनन्द सों, करत अति घने प्यार ।
सोभा होत संसार में, करत सबे मनुहार ॥४६॥

संध्या आरती अति प्रेम, प्रीत और आनन्द से होती है । समस्त सुन्दरसाथ आरती उतारते हुए सुख का अनुभव करते हैं । आत्म समर्पण एवं सेवा करने के कारण ही मोमिनों की प्रशंसा संसार के शास्त्रों में लिखी गई है । सुन्दरसाथ आपस में भी प्रेम, प्रीत का व्यवहार करता है ।

Nijanand App

झांझ ताल थैली मिने, ए दगड़ा राखत ।
आरती समें ल्यावत, भाखरिया नाचत ॥४७॥

झांझ, ताल आदि संध्या आरती के बजाने वाले यंत्र अपनी थैली में रखने की सेवा दगड़ा भाई करते हैं । आरती के समय में यह सब सामान दगड़ा भाई ले आते हैं । भाखरिया भाई आरती के आनन्द में विभोर होकर नाचने लगता है ।

दोऊ बाजू चंवर ढोरत, लालबाई पहिले ।
गोबिन्द दास करता था, कोई दिन सिवराम के ॥४८॥

दोनों ओर सुन्दरसाथ चंवर डोलाने की सेवा करते हैं । पहले लालबाई, पीछे गोविन्द दास चंवर डोलाने की सेवा करते हैं । कुछ दिन शिवराम भाई भी सेवा में शामिल रहते हैं ।

हरनन्द कोई दिन, सेख बदल लालखान ।
आखर आई इन पे, जिनका था ईमान ॥४९॥

चंवर डुलाने की सेवा में कुछ दिन हरनन्द भाई भी शामिल होते हैं । ये शेखबदल और लालखां की खास सेवा होती है । आखिर तक ये सेवा इनके पास ही रहती है क्योंकि ये बड़े विश्वास और ईमान के साथ सेवा करते हैं ।

गावे गवावें साथ को, ए सेवा मुकुन्द दास ।
आरती में आए खड़े, होत नित बिलास ॥५०॥

संध्या आरती में मुकुन्द दास स्वयं गाने और सुन्दरसाथ को गवाने की सेवा करते हैं । इस सेवा में मुकुन्द दास जी ठीक समय पर उपस्थित रहते हैं । संध्या आरती करके सुन्दरसाथ को आत्म सुख का अनुभव होता है ।

बिन्दा कन्नड़ गावहीं, और गंगा राम ।
अगरदास आनन्द सों, बद्री दास इन काम ॥५१॥

आरती गाने के लिए बिन्दा भाई, कन्नड़ भाई, गंगा राम, अगर दास और बद्री दास बड़े आनन्द के साथ शामिल होते हैं ।

कबहूं उत्तमदास आवहीं, बजावत हैं मृदंग ।
झांझ ताल बजावत, केतिक सैयां इन संग ॥५२॥

कभी-कभी उत्तमदास जी भी आरती में आते हैं और मृदंग बजाने की सेवा करते हैं । इनके साथ-साथ बहुत सुन्दरसाथ ताल और मृंदग बजाते हैं ।

Nijanand App

गावने में आगे खड़ा, परमानन्द प्रवीन ।
भाव दिखावत भेद सों, आया कूवत माफक आकीन ॥५३॥

सबसे आगे आरती गाने में निपुण गायक कलाकार परमानन्द जी खड़े हैं । आरती को भाव से गाकर प्रगट करते हैं जिससे रहस्य स्पष्ट हो जाता है । वे अत्यधिक शक्ति और विश्वास के साथ आरती गायन करते हैं ।

साथ सबे खड़े रहें, भरके बाजू दोए ।
झांझ मृदंग बजावत, आनन्द अजीम होए ॥५४॥

समस्त सुन्दरसाथ बंगला जी मंदिर में दाएं-बाएं दोनों ओर भर कर आरती का आनन्द लेने के लिए खड़े हैं । झांझ, मृदंग बजाए जाते हैं । आरती में अखंड परमधाम का सुख ही अनुभव होता है ।

सुन धुन इन समें की, कांपत कुली दज्जाल ।
ए नेहेचे मोकों मारेगा, ऐही मेरा है काल ॥५५॥

इस समय आरती की ध्वनि को सुनकर कलयुगी माया की शक्ति दज्जाल (अबलीस) भयभीत हो जाता है । वह समझ जाता है कि निश्चय ही श्री प्राणनाथ जी मुझको मार डालेंगे, मेरे अस्तित्व को समाप्त कर देंगे और मेरे लिए यही मेरी मौत का स्वरूप हैं ।

मेघा गादी बिछावत, श्री बाई जी के कदम तले ।
जब आरती करत हैं, श्री बाई जी खड़े ऊपर इनके ॥५६॥

मेघाबाई, बाई जू राज के चरणों के तले गादी बिछाती हैं । बाई जू राज श्री जी पर आरती उतारने के समय इस गादी पर खड़े होते हैं ।

आरती के बखत में, चादर बिछावत हीरामन ।
चावल बधावत श्री बाई जी, सब आरती वाली सैयन ॥५७॥

आरती के समय हीरामन श्री जी के आगे चादर बिछाते हैं । बाई जू राज आरती से पहले चावल समर्पित करती हैं और उनके पीछे सब आरती करने वाले सुन्दरसाथ भी चावल समर्पित करते हैं ।

श्री बाई जी करें तिलक, चौड़त हैं चावल ।
राघव रूमाल धरत है, करे सेवा अपने बल ॥५८॥

श्री बाई जू राज श्री जी के मस्तक पर तिलक करती हैं और चावल भी लगाती हैं । राघवदास श्री जी के सिर पर रूमाल रखते हैं । ये अपने विश्वास के बल से यह सेवा करते हैं ।

Nijanand App

आरती करें आनन्द सों, श्री बाई जी इत आई ।
ए सेवा की जोगबाई, साज रूकमनी ल्याई ॥५९॥

इस समय श्री बाई जू राज बंगला जी में आकर बड़े आनंद और उमंग के साथ अपने धाम धनी जी की आरती उतारती हैं । आरती को सजाने की सेवा रूकमणि बाई करती हैं ।

रूपे पच घड़ी आरती, गिरद दीपक जोत बतीस ।
करे फिरते प्रकास चहुंदिस, सेवत मन परतीत ॥६०॥

पांच खण्ड की चांदी की आरती, जिसमें चारों ओर ३२ दीपकों की ज्योति जगमग करती है । आरती का प्रकाश चारों ओर बहुत सुंदर दिखाई देता है । बाई जू राज मन में पूर्ण विश्वास लेकर ये सेवा करती हैं ।

और आवत करने आरती, लच्छो इन समें ।
दीपक जोत प्रकास के, कोई दिन हुई सेवा इनसे ॥६१॥

आरती गायन करने की सेवा लच्छो बाई करती हैं । कुछ दिन उन्होंने ''कंचन थाल चहु मुख दिवला, दीपक जोत प्रकाश'' भली प्रकार गायन करते हुए आरती उतारी ।

और अंबो करे आरती, सामिल दूजी तरफ ।
एक बाजू महतेन खड़ी, और भानी एक तरफ ॥६२॥

और दूसरी तरफ अम्बो आरती करने में शामिल होती हैं । एक तरफ महतेन खड़ी हैं और दूसरी तरफ भानी खड़ी हैं ।

और कई कुमारिका, लिए दीपक थाली हाथ ।
झलकत जोत चहुं दिस, करे बाई जी ऊपर साथ ॥६३॥

अन्य अनेक किशोर सखियां आरती उतारने के लिए दीपकों से भरी थाली हाथ में लेकर आती हैं। बंगला जी में चारों ओर संध्या आरती के समय दीपकों की रोशनी का प्रकाश फैल जाता है । बाई जू राज सब से आगे आरती उतारती हैं ।

कंचन थाल चहुं मुख दिवला, दीपक जोत प्रकासी ।
करत आरती जियावर रानी, आनन्द अंग उलासी ॥६४॥

संध्या आरती के समय परमधाम का ध्यान करते हुए बाई जू राज अपने धनी श्री प्राणनाथ जी की आरती उतारती हैं । सोने के थाल में चारों ओर दीपकों की ज्योति का प्रकाश फैला है । अपने प्राणनाथ की अर्धांगिनी बाई जू राज बड़े आनंद व उमंग से मन में उल्लास भरकर आरती उतारती हैं ।

Nijanand App

जुगल सरूप सुन्दर सुखदाएक, स्याम धाम धनी सोहे ।
मंगल रसिक बदन की सोभा, निरखन्ता मन मोहे ॥६५॥

युगल स्वरूप धाम के धनी श्री राजश्यामाजी सिंहासन पर शोभायमान हैं । उनका स्वरूप श्रृंगार मेरी आत्मा के लिए सुखदायी है । वह आनंद देने वाली शोभा से सुशोभित हैं । रसिक शिरोमणि युगल स्वरूप के मंगल दर्शन करके मेरी आत्मा मुग्ध हो गई है ।

सखियां निरत करें और गावें, आनंद अखंड अपार ।
ताल मृदंग झांझ जन्त्र बाजे, सखियां बोले जै जै कार ॥६६॥

सुंदर स्वरूप की आरती के समय सब सुंदरसाथ नाचते गाते हैं और रस भरी रसना के साथ राग अलाप रहे हैं । उनके मन में अपार उमंग है। ताल, मृदंग, झांझ आदि यंत्र बजाते हुए सब सुंदरसाथ जय-जयकार बोलते हैं ।

बधावें मुक्ताफल सखियां, श्री जियावर स्याम सुहागी ।
तन मन जीव निछावर कीन्हों, श्री इन्द्रावती चरणों लागी ॥६७॥

इस समय सब सखियां मोती-कपूर नारियल न्यौछावर कर रही हैं । अपने धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी की प्यारी शोभा निरखती हुई इंद्रावती की आतम, अपने जियावर प्राणनाथ पर अपना तन, मन, धन सर्वस्व न्यौछावर कर चरणों में प्रणाम करती है ।

रूकमनी थाल धरत हैं, श्री राज के आगे ।
कर पसार बीड़ा धरें, करे मेहर धाम धनी ए ॥६८॥

आरती के बाद रूकमणि बाई श्री जी के सम्मुख थाल रखती हैं । आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी हाथ बढ़ाकर थाल में पान-बीड़ा का प्रशाद अपनी कृपा दृष्टि से प्रदान करते हैं ।

और सबकी थाली में, डारत है बीड़ी ये ।
सेवा कल्याण प्रहलाद की, नित आवे करने के ॥६९॥

और सब आरती करने वाले सुंदरसाथ के थाल में भी पान-बीड़ा रखने की सेवा नित्य कल्याण भाई और प्रहलाद भाई करते हैं ।

इन भांत नित आनन्द, होत है बंगले में ।
कई खलक आवे दीदार को, सुन कायमी पावे इनसे ॥७०॥

इस प्रकार प्रतिदिन संध्या के समय बंगला जी में अद्वैत आनंद की वर्षा होती है । नगर के और लोग भी इस समय दर्शन करने आते हैं जो अखण्ड परमधाम की चर्चा सुनकर तथा आरती के दर्शन करके अखण्ड मुक्ति पा जाते हैं ।

Nijanand App

इत धुन सूरज मन, करे आरती बोध ।
श्री धाम धनी जियावर के, नाम लेत भागे बिरोध ॥७१॥

आरती के समय सूरजमन बहुत ऊंचे स्वर में आरती बोलते हैं । अखण्ड धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी का नाम लेने से ही सब विरोध और दुःख दूर हो जाते हैं ।

एही अक्षरातीत है, एही हैं धनी धाम ।
एही महम्मद मेहंदी ईसा, एही पूरे मनोरथ काम ॥७२॥

यही प्राणनाथ जी अक्षरातीत, परमधाम के पारब्रह्म, धाम के धनी हैं । श्री प्राणनाथ जी ही मुहम्मद साहिब, ईसा रूह अल्लाह (श्यामा महारानी) देवचन्द्र जी के स्वरूप हैं और इनकी ही अपार कृपा से सबकी मनोकामना पूर्ण होती है और सारे संसार को अखण्ड मुक्ति मिलनी है ।

इन भांत कई गावत, होए के मन मगन ।
कई साथी संग गावत, साथें सूरज मन ॥७३॥

इस तरह सब सुंदरसाथ मग्न होकर कई प्रकार के स्वरों से आरती गायन करते हैं । सूरजमन भाई के साथ सब सुंदरसाथ मिलकर आरती गायन करते हैं ।

इन भांत आरती समें, कई विध होत कलोल ।
हैं गए बंगले ना सुनात, कोई सुख नाहीं इन तोल ॥७४॥

इस तरह संध्या आरती के समय कई प्रकार के आनंद विहार की लीला होती है और बंगला जी में आरती की आवाज इतनी गूंज उठती है कि और किसी की आवाज सुनाई ही नहीं देती । इस सुख के समान संसार में कोई और वस्तु नहीं है ।

एक पहर रात लों, होत है ए मनुहार ।
कोई आवत कोई जात है, कहां लों कहूं प्रकार ॥७५॥

एक पहर अर्थात् ९ बजे तक यही आरती का कार्य चलता है और सब सुंदरसाथ आनन्द में विभोर होकर सुख लेते हैं । कुछ सुंदरसाथ बंगला जी में आते हैं, कुछ जाते हैं, उनका हिसाब कहां तक कहा जाए ।

सिंहासन बाई जी, जुगल सरूप सोभाए ।
आनन्द सरूप सुतेज को, कहां लों कहूं बनाए ॥७६॥

सिंहासन पर बाई जू राज और श्री प्राणनाथ जी का सुंदर युगल स्वरूप (श्री राज जी और श्यामा जी के साक्षात् स्वरूप) शोभायमान होता है । अखण्ड आनंद के देने वाले तेजोमयी स्वरूप की शोभा का कहां तक वर्णन करें ।

Nijanand App

महामत कहें ऐ साथ जी, भया चरचा का वखत ।
अब तुम सुनियो चित दे, लाल आगे आए बैठे इन तखत ॥७७॥

अब धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुंदरसाथ जी ! अब छठा पहर, रात्रि को ९ से १२ बजे तक अखण्ड परमधाम की चर्चा जो आप स्वामी जी अपने मुखारविंद से करते हैं, उसका समय आ गया है । अब आप सब सुंदरसाथ भी अपने मन, चित्त, बुध को माया से हटाकर धनी के चरणों में लगाकर एकाग्र होकर सुनो । लालदास जी भी इस समय चर्चा सुनने के लिए तख्त के सामने आकर बैठ जाते हैं ।

(प्रकरण ६८, चौपाई ४१०५)

छठा पहर

अब कहों पहर छठे की, जित चरचा होत है हक ।
बैठे सुंनत जमात, जो खास गिरोह बुजरक ॥१॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुंदरसाथ जी ! अब छठे पहर,जब रात्रि को ९ से १२ बजे का समय होता है, की महिमा बेशुमार है क्योंकि उस पहर में धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी, पारब्रह्म अक्षरातीत की, परमधाम के २५ पक्षों की चर्चा सुनाते हैं जिसे सुनने के लिए परमधाम के खासलखास मोमिन (ब्रह्मसृष्टि) बैठते हैं ।

साथ सबे बंगले मिने, बैठे होए सनमुख ।
केसव दास बानी पढ़ें, कह्यो न जाए ए सुख ॥२॥

सब सुंदरसाथ चर्चा सुनने के लिए तख्त के सामने आकर बैठते हैं । केशवदास जी वाणी पढ़ने के लिए बैठते हैं । इस अखण्ड सुख का वर्णन कहा नहीं जा सकता ।

कुरान हदीसां बांचने, बैठत है दास लाल ।
गोकुलदास पढ़त हैं, करने राज खुसाल ॥३॥

लालदास जी के साथ गोकुलदास कुरान और हदीसों की वाणी पढ़ने की सेवा करते हैं । जिससे श्री जी बहुत प्रसन्न होते हैं ।

इत चरचा होत है चोपसों, बरखा होत अद्वैत ।
रसना मीठी सों कहें, उड़ जात सब द्वैत ॥४॥

इस समय आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी रसमयी रसना से मग्न होकर अखंड परमधाम की वाणी का वर्णन करते हैं, जिसके सुनने से संसार का द्वैत उड़ जाता है और स्वपन की बुद्धि हट कर जाग्रत बुद्ध आ जाती है ।

Nijanand App